ISSN 2278-8808
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री चेतना

रश्मि

शोधार्थी हिन्दी विभाग जय नारायण विश्वविद्यालय, जोधपुर

स्वतंत्र भारत में पिछले 67 वर्शो से सामाजिक, आर्थिक तथा राजनितिक परिस्थितियों में बदलाव होते रहे हैं पर महत्वपूर्ण बदलाव महिलाओं की दशा में दृश्टिगत हुआ है। महिला सशक्तिकरण के द्वारा महिलाओं की स्थिति में आमूल परिवर्तन हुआ है। हिन्दी साहित्य के समकालीन लेखाकों में महिला रचनाओं की रचनाएं स्त्री–चेतना से अछूती नहीं रही। इन महिला रचनाओं के बहुतायत उपन्यास महिला–प्रधान रहे या उनकी परिस्थितियों में रूबरू होते रहे। मन्नू भण्डारी का 'महाभोज' उपन्यास राजनैतिक सन्दर्भो को उजागर करता है तो वही प्रभा खेतान के 'छन्नमस्ता' पीली आँधी' उपन्यास कुमारीका जीवन की विसंगतियों को द" र्ाते है। साथ ही ममता कालिया का 'बेघर', 'नरक दर नरक' स्त्री जीवन की बिडम्बना को दर्शाता है। इन्ही सम्कालीन रचनाओं में भाक्सियत हैं– नासिरा भार्मा। नासिरा भार्मा ने अपने कथा साहित्य में न केवज स्त्री समस्याओं का उल्लेख किया है, अपितु समाधान में प्रस्तुत किया है। कुमार पंकज के भाब्दों में– ''नासिरा भार्मा उन रचनाओं में हैं जिन्होने महिला मुद्दो को अपनी कलम का निशाना बनाया है। यह सच की महिला दर्द को महिला से बेहत्तर कौन जान सकता है। इनकी कहानीयाँ मध्यम वर्ग की उस नारी की है जो नारी–त्रासदी एवं विकृत मनोवृतियां व मानसिकताओं के बीच जीती है। इनके कथा साहित्य में स्त्री की भावनाओं और संवेदनाओं का इतना मार्मिक चित्रण है कि पाठक वर्ग कहानियां के पात्रों में स्वयं की झलक देखता है। नारी की भावनाओं की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति से नासिका जी ने समाज में नारी के अस्तित्व को अस्मिता प्रदान की। नारी जीवन की तमाम जटिलताओं ने उनकी लेखनी को संस्कार प्रदान किया। इनके कथा साहित्य में स्त्रियां के अनेक मुद्दों पर खुली चर्चा हुई है। वे आधुनिकता के नाम पर स्त्री स्वच्छंदता की पक्षधर नहीं है। इसलिए उनकी नारी मात्र आधुनिक होकर उच्छृंखन नहीं है। पत्थरगली नासिका का पसंदीदा कहानी संग्रह है। इन्होने इस कहानी संग्रह के सम्बन्ध में लिखा है– '' यह कहानियाँ धरती पर बसे किसी भी इंसान की हो सकती है, क्योंकि दर्द सर्वव्यापी है फिर भी इन कहानियों कर अभिव्यक्ति का स्त्रोत एक विशेश परिवेश हैं''।

पत्थरगली की मुख्य पात्र 'फरीदा' है। लेकीन पत्थरगली कहानी 'फरीदा' की नहीं बल्कि उस समाज की हैं जो रंग–बिरगें होते हुए भी एक जैसी समस्या से जूझ रहा है। उसकी सारी सहलीयों के

घर की यही कहानी है जिनके भाई कुछ नहीं करते, जिनके बाप नहीं हैं, उनको अपनी जीवीका के दूसरो के सामने हथियार डालने पडते हैं। पत्थरगली में 'फरीदा' और बडे भाई की टकराहट पुरानी व नई सोच के साथ अपासी अंह की टकराहट थी। ''रूढियों के घटाटोप में ढका हुआ समाज विशेश का, नारी जाती की घुटन बेबसी और मुक्ति की छटपटाहट का, जसा चित्रण इस कहानी में हुआ है अन्यत्र दुर्लभ हैं।

इस संग्रह के विशय में नासिका जी का कहना है– '' मेरी ये कहानीयाँ दुःख और मुजरां के सुख का मोहभंग करती हुई एक ऐसी गली की सैर कराती हैं जो पत्थर की गली है। इस पत्थर की गली में रहने वाले निकास के लिए छटपटाते पत्थर से टकराकर लहूलुहान हो उठते है।

संगसार कहानी संग्रह में कई कहानीयां ऐसी है जो स्त्री की बुनयादी अस्मिता की दास्तान है। संगसार कहानी की आसिया प्रेम की पवित्रता का सच्चा नमूना है। पति के साथ बेवफाई के बावजूद उसके विवाहेत्तर प्रेम–संम्बन्ध में जुदाई है। उसे कोर्ट द्वारा संगसार करने कें सजा भी सुनाई गई है। उस रात औरतों ने चुल्हे नहीं जलाए, मर्दो ने खाना नहीं खाया, सब एक–दुसरे आँख चुराते है। यदि असिया गुनगाहर है तो उसके संगसार होने पर ये दर्द, यह कसक उनके दिलों कों क्यों मथ रही थी।

गूंगा आसमान कहानी की 'मेहरअंगीज अपने लंपट लेकिन सत्तापोश पति के चुंगल से तीन जवान स्त्रीयों को छुटकारा दिलवाती है। यहाँ एक स्त्री के चरित्रिक बहादुरी का सहज चित्रण हैं। दरवाज–ए–कजविन की 'मरियम' ऐसी औरत है जो समाज की सडी–गली रस्मों का शिकार है। मरियम की नियती यही हैं। वह पूछती है– ''क्या बदलाव इसलिये चाहते थें? हमारा गुनाह क्या था? क्या इस बदलाव के बावजूद स्त्री की सिथित जस की तस है कि उसका भोशण मानसिक और भारीरिक स्तर पर लगातार होता रहे? उसकी हालात कमतर बनी रहे। ये कहानी औरत की मजबूरी की त्रासदा दास्तान है।

नमक का घर कहानी की '" हरबानां' अपने खोए घर और गुम" दा परिवार की त्रासदी झेलती औरत खुदा की वापसी संग्रह की नई कहानियां में दुखियारी नासिकाएं विभिन्न कोरणों से पति को छोडकर भाई, माँ व पिता के घर आश्रय लेने के लिए मजबूर हो जाती हैं। नासिका जी ने अपने आस–पडोस में इस माहौल को महसूस किया और इसे अपनी लेखनी से कहानियों में उकेरा है। इस संग्रह की अधिकांश कहानियॉ विभिन्न स्त्रियों का प्रतिनिधत्व करती है। मेरा घर कहाँ मे लाली धोबन की बेटी 'सोना' हो या नई हुकूमत की 'हजारा या बचाव की नायिका 'रेहाना' हर कहानी में नारी–संर्घश और उत्पीड़न का जीता जागता उदाहरण मौजूद है। चार बहनें भीशमहल की में शरीफ के घर में लडकी का पैदा होना अपशगुन माना जाता है। बाहर दुकान पर चुडी पहनाते हुये लडकी का जख्मी हाथ देख शरीफ का दिल भी जख्मी हो जाता है। जिन औरतो और लडकीयों की बदौलत उसकी जिंदगी की गाडी चल रही है, रोटी नसीब हो रही है। उसी के घर में लडकी का पैदा होना मनहूसियत

की बात है। बुतखाना कहानी संग्रह की कहानी अपनी कोख भूरण परीक्षण पर लिखी गयी कहानी है। स्त्री की स्वायत्ता, उसके वजूद व आत्मनिर्भर की कहानी है। इसकी नायिका 'साधना' विवाह के उपरान्त बच्चियों की माँ बन जाती है। तीसरी बार उससे अपेक्षा की जाती है कि भूरण परीक्षण में इस बार भी पूत्री हो तो गर्भपात करा लें। गभ में पुत्र होन पर भी वह यह सोचकर वह गर्भपात करा देती है, पुत्र होने पर उसकी पुत्रियों के साथ भेदभाव बढ जाएगा। ये कहानी एक अनकहा सत्य है। शालम्ली उपन्यास में स्त्री का भाोशण, भेदभाव, अत्याचार, पत्नी की सफलता के कारण पति में कुंठा भाव, वैवाहिक औपचारिकता की अभिव्यक्ति है। 'इसमें पंरपरागत नायिका नहीं है, बल्कि वह अपनी मौजूदगी सें यह अहसास जगाती है कि परिस्थितियों के साथ व्यक्ति का सरोकार चाहे जितना गहरा हो, पर उसे तोड दिए जाने के प्रति मौन स्वीकार नहीं होना चाहिए।

''ठीकरे की मंगती उपन्यास की नायिका 'महरूख' भाालमली की तरह धीर, गंभीर एंव आत्म–निर्भर नारी है। वह समाज के बन्धनो के कारण घुटन भरा जीवन व्यतीत करती हुई, आत्मसमर्पण नहीं करती अपितु विपरीत दि" ाा में उसका सामना भी करती है। नासिरा भार्मा का 'इरान की खुनी क्रांति' पर लिखा, बहुचर्चित उपन्यास सात नदियाँ एक समन्दर सात महिलाओं को केन्द्र में रखकर लिखा गया उपन्यास उनके सांझे दर्द को बयान करता है। फैज ने कहा है– बडा है दर्द का रि" ता ये दिल गरीब सही। तुम्हारे नाम पर आयेंगे गम–गुसार चले। यहीं से दर्द फैलता है पूरी कायनात पर छा जाता है। 'ईरानी क्रान्ति' मे जनता पर होने वाले अत्याचारों का संवेदन" ाील चित्रण सात महिलाओं के साथ किया गया। नासिरा जी ने इस उपन्यास के लिए लिखा–'मेरे इस उपन्यास में इंसान की आरजू, तमन्ना और इच्छा से भरे अधूरे सपनों का बयान है। जो किसी भी व्यक्ति की निजी धरोहर है।

कोई भी युद्ध हा, क्रांति को, उससे सबसे ज्यादा प्रभावित स्त्रियाँ ही होती है, सबसे अधिक पीडा, यंत्रणा, स्त्री को ही झेलनी पडती है। उपन्यास, कहानी संग्रह के अलावा इनका 2003 में लेख–संग्रह औरत प्रकाि" ात हुआ। जिसमें आपने पूरी संवेदन" ाीलता और आत्मीयता के साथ ना केवल देश वरन विदश तक की औरतों की समस्याओं कों दिशाबद्ध करने का प्रयास किया। इन्होने जाग्रत होती स्त्री चेतना में आंधियाँ ही नहीं भरी बल्कि बुद्धिमता से नए रास्ते बनाने का जो" ा भी भरा। इनकी खुली मानसिकता, सन्तुलित दृश्टि बार–बार स्पश्ट करती है, कि मनोमस्तिश्क चेतना और भाक्ति मैं औरत कमतर नहीं है। अपनी पुस्तक के हर लेख में इन्होने स्वस्थ सम्बन्धों पर जोर दिया है। 'समाज सिर्फ मर्दो द्वारा नहीं बना, बल्कि इसके ताने–बाने में मर्द तथा औरत दोनो का बजूद है, ...मर्द और औरत एक चने कर दो दाल हैं, अर्थात दोनो इंसान का रूप है।

नासिका जी ने औरतो की जिंदगी की एक–एक बारीकियों कों उनके परिवार के सदस्य की तरह देखा, उनके भरोसे को जीता है। त्रासद पीड़ा झेलती बेबस स्त्रियाँ ममत्व भाव व आत्मीयता में जीती है, और उनसे मुक्त होने का साहस भी नहीं कर पातीं। नासिका जी लिखती हैं– ''जिन कुरीतियों एवं परंपरा से भारत मुक्त था, वही आज की मुख्य समस्या बन चुकी हैं, जैसे बंधुओं मजदूरी, इत्यादी

लाख कानून बने मगर उसका पालन अभी पूरी तरह नहीं हो रहा हैं। उसी तरह महिलाओं के प्रति बने कानून, फाइलों की भाोभा अव" य बन चुके है। मगर समाज का दृश्टिकोण अधिक पुरातनपंथी बन गया है।

नासिका भार्मा जी का कहानी संसार मुख्यतः नारी के प्रति असमानताओं एवं उसके अस्तित्व की रक्षा के लिए लड़ा जा रहा अनवरत युद्ध है। इनकी कहानीयां अपने घर की तहजीब व समाज के अधेंरे को दूर करती वे शमाएँ हैं जिसकी रोशनी इतिहास के पन्नों तक फैली हुई है। ये कहानीयां केवल कहने व सुनने तक ही सीमित नहीं है बल्कि अतीत व वर्तमान के तारीखी दस्तावेज हैं जिनकों पढा व समझा जा सके। इनकी कहानीयों में 'नारी' की जिंदगी का महाकाव्य है। नासिका भार्मा स्त्री विमर्श की प्रमुख कथाकार है। स्त्री विमर्श इसलिए प्रासंगिक है कि इन्होंने महिलाओं के हितों की चर्चा करते हुए, स्त्री के बहाने मानवीय सवालों से रूबरू करवाया। इनकी कहानीयों में नैतिकता, ईमानदारी और तहजीब की महीन बुनावट है। इन्होने अपनी रचनाओं में नरी मन को जबरदस्त तरीके से उरेका हैं। नासिका जी इस्लाम धर्म के आधार पर नारी सशक्तिकरण के साथ–साथ भरतीय मुस्लीम परिवारों की त्रासदी की कहानीयों को रेखांकित करती है। साथ ही मुस्लीम स्त्री अधिकार के प्रत्येक पक्ष का उद्घाटन भी करती है। इनकी कहानी की नासिका रोती नहीं, अकेले में भी नहीं।

वहीं प्रभा खेतान की नायिका 'आओ पेप घरे चलें' में कहती हैं– ''औरत कब रोती और कहाँ नहीं रोती। जिनका वह रोती है, और उतकी ही औरत होती जाती है। ''दोनो की नायिकाओं में इतना फर्क है कि समाज एक अकेली किंकर्तव्यविमूढ औरत को रोते देखना चाहता है। इसलिए वह उसे तरह–तरह से रूलाता है। रोते चले जाने का संस्कार देता है। वहीं एक शिक्षित परिपक्व स्त्री स्वाभिमान की मनोद" ाा में किसी का कंधा नहीं तला" ाती। समता एवं स्वतंत्रता के लिए संघर्श कर अपने पैरों पर खड़ी होने का साहस करती है। उसे अपनी अस्मिता का बोध है, जिसकी रक्षा करने म वह सक्षम है। य" ा मालवीय के भाब्दों में ''नासिका भार्मा के कथासाहित्य में औरत ऑचल में दूध और आँखो में पानी वाली औरत नहीं है। वह पितृसताम्क समाज के सामने सीना तानकर खड़ी हो जाती है, प्रतिरोध के स्वर मुखरित करने लगती है। इन कहानीयों को पढकर नीद नहीं आती बल्कि आई हुई नींद कई–कई रातों के लिए उड़ जाती है।''

सन्दर्भ ग्रन्थः–

कुमार पंकज, जिन्दगी के असली चेहरे, आजकल पत्रिका।

शर्मा नासिका, मेरे जीवन पर किसी के हस्ताक्षर नहीं।

शर्मा डॉ. नीलम, मुस्लिम कथकारों का हिन्दी योगदान।

शर्मा नासिका, पत्थरगली, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2011।

शर्मा नासिका, संगसार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली संस्करण–2009।

शर्मा नासिका, शाल्मली, किताबघर, प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2013।

शर्मा नासिका, सात नदियों एक समन्दर।

शर्मा नासिका, औरतो के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, स.2002.

शर्मा नासिका, किताब के बहाने, स. 2001।